ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 3 अंक : 1 अक्टूबर-नवम्बर 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

दीपावली पर लक्ष्मी प्राप्ति के अचूक उपाय	डा. महेश पारासर	2
किस घर में आती हैं लक्ष्मी?	डा. रचना भारद्वाज	4
दीपावली पर्व पर दुर्लभ वस्तुओं के प्रयोग	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
आचरण व्यवहार में परिवर्तन लाऐगा लक्ष्मी को आपके पास	श्रीमती कविता अगरवाल	6
!!धन तेरस!!	पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
आर्थिक समृद्वि के लिए दीपावली पर करे विशेष स्थापना	मोनिका गुप्ता	8
कार्य सिद्धि एवं आर्थिक समृद्वि के लिए दीपावली पर करे अचूक प्रयोग	पं. दयानन्द शास्त्री	9
राशि के अनुसार लक्ष्मी पूजन	पं. अजय दत्ता	9
दीपावली पूजन विधि	डा. महेश पारासर	10
दीपावली पर्वोत्सव पर अभिमन्त्रित धन प्रदायक पूजन साम्रगी	पं विष्णु पाराशर	11
राशियाँ ही खोलती है धन के द्वार	डा. श्रीमती रेखा जैन (आस्था)	12
धन तेरस (दीर्घायु एवं स्वस्थ.....)	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
वैवाहिक जीवन पर मंगल का प्रभाव	सीता राम सिंह	16
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

दीपावली पर लक्ष्मी प्राप्ति के अचूक उपाय

निश्चित रुप से दीपावली प्रकाश पर्व है लेकिन सबसे पहले हमें प्रकाश की सही परिभाषा समझनी होगी। प्रकाश का तात्पर्य केवल दीपक, मोमबत्ती और बिजली से कृत्रिम प्रकाश कर कदापि नहीं है और यदि उजाला करना ही दीपावली है तो कोई महत्त्व नहीं है ऐसी दीपावली का? क्या महत्त्व है ऐसे प्रकाश का जो केवल एक ही रात के लिये किया जाये अगली रात फिर अन्धकारामय दिखाई दे? सही अर्थो में प्रकाश तो वो है जो जीवनपर्यन्त रहे, जीवन के अंधेरे मिटाकर जीवन को जगमग करता रहे और प्रकाश पर्व दीपावली का यही अर्थ है, यही इसकी विलक्षणता है, यही इसका संदेश है कि इस दिवस का सदुपयोग करके हम अपने जीव में लक्ष्मीरुपी समृद्धता का इतना तीव्र प्रकाश करें जिसकी जगमगाहट से दरिद्रता अभाव, कर्ज और असफलता रुपी अंधकार जीवन में कभी भी उत्पन्न न हो सके, हमारा पूरा जीवन सम्पन्नता और ऐश्वर्य के प्रकाश से जगमगाता रहे और जो बन्धु लक्ष्मी तंत्र–पर्व **"दीपावली"** के महत्त्व को सझकर इस दिवस की तेजस्विता का सही सदुपयोग

श्री महा धनदाता लक्ष्मी यंत्र

श्री लक्ष्मी यंत्र

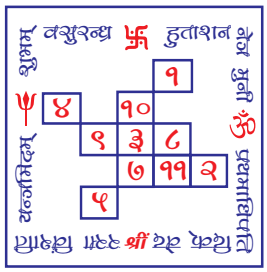

श्री गणेश यंत्र

श्री धन वापसी यंत्र

श्री विष्णु यंत्र

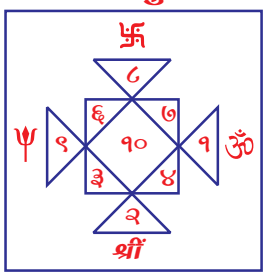

श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र

श्री गरुण वीसा यंत्र

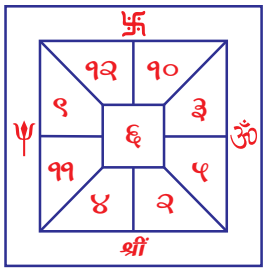

कर लेते हैं निश्चित रुप से वे जीवनपर्यन्त अभाव, दरिद्रता और असफलता रुपी अन्धकार से अछूते रहते हैं मुक्त रहते हैं। वर्तमान युग **प्रतिस्पर्धा** का युग है। मेंहगाई दिन भर दिन बढ़ती ही जा रही है। चाहे कितना भी धन अर्जित कर लो, फिर भी ऐसा लगता है कि धन का आवागमन ठीक नही हो रहा या फिर कम हो रहा है। व्यक्ति रात–दिन आय के श्रोत बढ़ाने के बारे में सोचता रहता है। यह काफी हद तक उचित भी है। व्यक्ति मेंहगाई से तो लड़ नहीं सकता तो क्यों न वह आय की वृद्धि करें?

आय की वृद्धि यानी लक्ष्मी का आगमन। वैसे तो लक्ष्मी को हमेशा ही पूजा जाता है लेकिन दीपावली पर लक्ष्मी–गणेश की आराधना का विशेष महत्व हिन्दू धर्म में बताया गया है। दीपावली पर सभी लक्ष्मीजी–गणेश जी की पूजा पूर्ण मनोयोग से करते है लेकिन यदि दीपावली पर थोड़े से विशेष उपाय कर लिए जायें तो वर्ष पर्यन्त माँ लक्ष्मी की साधक और उसके परिवार पर विशेष दृष्टि रहती है। इस वर्ष दीपावली **13 नवम्बर 2012** दिन मंगलवार को मनायी जायेगी। हिन्दूओं के लिए इस पर्व का बहुत महत्व है। सम्पूर्ण भारत वर्ष के अतिरिक्त जहाँ–जहाँ भारतीय मूल के लोग निवास करते है यह पर्व धूमधाम के साथ करीब–करीब सम्पूर्ण देशों में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी परिवार लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा श्रद्धा भाव से करते हैं। सभी घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों में महालक्ष्मी का पूजन अवश्य करते हैं। व्यापारी वर्ग बही खाता तिजोरी ओर तराजू की पूजा करते है। दीपावली के दिन लक्ष्मी–गणेश जी की विशेष पूजा करने से वर्ष भर लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। दीपावली पर स्थिर लग्न में पूजा करने का विधान है। दीपावली पर पूजा तो सभी करते है परन्तु किस प्रकार से और किस चीज के साथ पूजा की जाऐ तो वर्ष पर्यन्त श्री लक्ष्मी जी की पूर्ण कृपा बनी रहें।

सिद्ध धन दाता लक्ष्मी यंत्र एवं मनोकामना पूर्ति यंत्र– दीपावली के पूजन में श्री धन दाता लक्ष्मी यंत्र की पूजा विधि विधान से करने से माँ लक्ष्मी की कृपा चिरकाल तक बनी रहती है। माँ लक्ष्मी की स्थिरता के लिए ही इस यंत्र की पूजा दीपावली पर की जाती है। इसकी पूजा बहुत ही आसान है। इस यंत्र को स्थापित करने इस यंत्र की फल, फूल, गंध, अक्षत, रोली, कुमकुम से पूजन करके इस यंत्र से लक्ष्मी पीछे लघु बीज मंत्र **"ऊँ श्रीं ह्री श्री महालक्ष्म्यै नमः"** मंत्र का 11 माला जाप कमल गढ्ढे की माला या स्फेटिक की माला से करना चाहिए। इससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर सभी तरफ से खुशहाली प्रदान करती है।

उपरोक्त दोनों यंत्रों की पूजा से अद्‌भुत और तुरन्त प्रभाव मिलता हैं। यदि शुद्ध आचरण और मनोकामनों से यंत्रो की पूजा करता हैं उस पर माँ लक्ष्मी जी वर्ष पर्यन्त असीम कृपा बनी रहती है, तो अपनी दीपावली को शुभ दीपावली बनायें। दीपावली पूजन की विधि पत्रिका के पेज क्रमांक 10 पर विस्तार से दे रखी हैं।

महेश पारासर

दीपावली पूजन का समय सन् 2012

13-11-2012 **मंगलवार के दिन पूजन समय प्रातः 7:00 से 11:17 तक, दोपहर** 01:01 **से** 2:40 **बजे तक, सांय** 5:33 **से 9:43 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय प्रातः 10:41 से 11:17 बजे तक, सांय** 7:06 **से रात्रि** 8:45 **तक एवं रात्रि** 12:06 **से रात्रि** 01:41 **तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय दोपहर 2:45 से सायं 4:06 तक।**

पाठकों के पत्र

श्रृदेय गुरुजी, सादर चरणस्पर्श

आपकी पत्रिका भविष्य निर्णय धर्म व ज्योतिष के क्षेत्र की वह पत्रिका है जो दिन पर दिन अपनी जड़ें मजबूती के साथ जमा रही है। आपका लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक था। डॉ. शोनू मेहरोत्रा व डा. रचना भारद्वाज जी के लेख बेहद रुचिकर व ज्ञानवर्धक होते हैं। गुरू जी सम्भव हो तो इस बार दीपावली की विधि एवं किन यंत्रों या उपायों को करने से लाभ मिलेगा, कृपाा करके विस्तार से समझायें।

सधन्यवाद

हरीश वर्मा
जयपुर

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का गत अंक बहुत रोचक लगा। आपकी पत्रिका मार्ग दर्शक का कार्य करती है। पत्रिका के लेख अंधविश्वास को दूर करते हुए धर्म और आध्यात्म का रास्ता दिखाते हैं। पिछले कुल अंक तो ऐसे हैं जिन्हें बार–बार पढ़ने की इच्छा करती है। आपकी पत्रिका का अंक संग्रहणीय होने के साथ–साथ ऐसा होता है कि यदि किसी कारण से वह अंक कुछ समय बाद पुनः पढ़ा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे शायद पहले कुछ छूट गया था। आपकी पत्रिाका के लिए शुभ विचार रखने वाली आपकी बेटी।

रजनी रघुवंशी
अम्बाला

किस घर में आती हैं लक्ष्मी?

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

कौन नहीं चाहता कि श्री लक्ष्मी का वास उसके घर में हो, लेकिन यह कोई नहीं जानना चाहता कि लक्ष्मी जी को कैसा घर पसंद हैं? भले ही आपकी कितनी ही इच्छा लक्ष्मी जी को अपने घर में बुलाने की हो, लेकिन आपका घर उनकी पसंद के अनुकूल नहीं है, तो वे कतई आपके घर में नही आएँगी। प्रस्तुत लेख में यही बताया जा रहा है कि किन जातकों का घर श्री लक्ष्मी के निवास के लिए उपयुक्त होता है। यहाँ बताए जा रहे नियमानुसार यदि आप अपने घर को सुव्यवस्थित करते है, तो निश्चित रुप से श्री महालक्ष्मी आपके घर में आने के लिए बाध्य हो जाएँगी।

स्वच्छता–लक्ष्मी जी को स्वच्छता अत्यन्त प्रिय है एवं उनकी सहोदरा दरिद्रता को गन्दगी बहुत पसन्द है। जो व्यक्ति घर सदैव स्वच्छ रखते है, उनके घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। यही कारण है कि सभी दीपावली के पर्व से पूर्व अपने–अपने घरों को अच्छी प्रकार से साफ करते है और रंग–रोगन आदि करके सजाते हैं।

मांगलिक चिन्हं–प्राचीन काल से ही अनिष्ट निवारण के लिए और शुभ फलों की प्राप्ति के लिए स्वस्तिक, ऊँ, त्रिशुल, मंगल कलश आदि मांगालिक चिंहों का प्रयोग किए जाने की परम्परा चली आ रही है। इन मांगलिक चिंहों को घर के मुख्य द्वार पर या अन्दर के प्रवेश द्वारों पर लगाया जा सकता है अथवा प्रतीक रुप में दीवार पर भी बनाया जा सकता है। इसके प्रभावस्वरुप कोई भी नकारात्मक शक्ति घर के अन्दर नहीं आ पाती है और धन का आगमन निरन्तर बना रहता है।

तंत्रोक्त धनदायक वस्तुओं की स्थापना–तंत्र–मंत्र से सम्बन्धित भारतीय ग्रंथों में धनवृद्धि की अनेक ऐसी वस्तुओं का वर्णन किया गया है, जो कि वैसे तो दुर्लभ है, लेकिन घर में इनकी स्थापना और पूजा–अर्चना से चामत्कारिक लाभ प्राप्त होता है। इन चमत्कारिक वस्तुओं में एकांक्षी नारियल, स्फटिक श्रीयंत्र, दक्षिणावर्ती शंख, गोमती चक्र, श्वेतार्क गणपति, क्रिस्टल बॉल, काली हल्दी आदि का नाम आता है। ये सभी वस्तुएँ किसी शुभ मुहूर्त तथा होली, दीपावली, ग्रहण रविपुष्य या गुरुपुष्य मुहूर्त में स्थापित की जानी चाहिए। इनमें से कुछ वस्तुएँ तो अत्यन्त दुर्लभ है, लैकिन कुछ वस्तुएँ जैसे स्फटिक श्रीयंत्र, गोमती चक्र आदि सरलता से उपलब्ध हो जाते है। धन की देवी के प्रिय पर्व दीपावली पर इनकी स्थापना शुभ मुहूर्त में की जाना सर्वाधिक शुभ होता है।

भगवत् आराधना, कीर्तन और रामचरितमानस पाठ– जिस घर में नियमित भगवन्नाम कीर्तन किया जाता है, स्तोत्र पाठ किया जाता है अथवा श्रीरामचरिमानस या किसी अन्य धार्मिक ग्रंथ का उच्च स्वर से नियमित पाठ किया जाता है, वहाँ किसी भी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा नहीं रह पाती है और वहाँ के रहवासी हर प्रकार से सम्पन्न रहते हैं। निरन्तर लक्ष्मी की कृपा उन पर बनी रहती है और दरिद्रता की कमी उस घर में नहीं हो पाती है। सभी स्तोत्र पाठों में यदि लक्ष्मी–नृसिंह स्त्रोत्र, श्री सूक्त, लक्ष्मी सहस्त्रनाम आदि का पाठ किया जाए, तो उत्तम रहता है, क्योंकि ये स्तोत्र लक्ष्मी को अत्यधिक प्रिय है।

शंखनाद एवं धूप– लक्ष्मी को शंखनाद भी अत्यन्त प्रिय होता है। जिस प्रकार से समुद्र मंथन से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई थी, उसी प्रकार शंख की उत्पत्ति भी समुद्र मंथन से हुई थी। यही कारण है कि शंख को लक्ष्मी का सहोदर कहा जाता है। प्रतिदिन सुबह–शाम शंखनाद अवश्य करना चाहिए। इसकी ध्वनि से जहाँ दरिद्रता का नाश होता है, वहीं लक्ष्मी के आगमन का मार्ग भी प्रशस्त होता है। इसके अतिरिक्त प्रातः–सायं घर में गुग्गुल की धूप भी करनी चाहिए। यह धूप पितरों को अत्यन्त प्रिय होती है। यदि पितृदोष की वजह से घर में परेशानियाँ चल रही है, तो इसकी धूप से वह दोष भी धीरे–धीरे दूर हो जाता है और धनागम के अवसर बनते है।

वनस्पतियों से धन समृद्धि– लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न पेड़–पौधे भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। श्वेत आक, तुलसी, केला, मनीप्लान्ट, पारस–पीपल, हारश्रृंगार अशोक, कमल आदि का रोपण घर में करना अत्यन्त शुभ होता है लेकिन इन सभी को लगाने में अत्यन्त सावधानी रखनी चाहिए। इन्हें किसी शुभ मुहूर्त में ही लगाना चाहिए। धनतेरस के पर्व पर इनका रोपण करना बहुत शुभ होता है। तुलसी, पासर पीपल और श्वेत आक इन्हें लगाने के पश्चात् प्रतिदिन इनके नीचे दीपक भी जलाना चाहिए।

सूर्योदय के पूर्व जागरण– शास्त्रों के अनुसार लक्ष्मी प्राप्ति के आकांक्षी को सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाना चाहिए और नित्य कर्म से निवृत्त होकर संध्या वंदन में लग जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त जिस घर के लोग प्रेम से, शांति से रहते हैं, परस्पर क्लेश नहीं करते है, असत्य नहीं बोलते है, उनका घर लक्ष्मी जी को सर्वाधिक प्रिय होता है। यदि आप भी चाहते हैं कि लक्ष्मी सदैव आपके घर स्थिर रुप से निवास बनाए, तो उपर्युक्त सभी उपायों को अधिकाधिक रुप से अपनाने का प्रयास करें। फिर देखेंगे कि रातों–रात किस्मत कैसे बदलती हैं?

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
भविष्य दर्शन®
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666
❋❋❋

दीपावली पर्व पर दुर्लभ वस्तुओं के प्रयोग

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

दीपावली पर्व हिन्दू धर्म के लिए महापर्व है इस पर्व की महिमा जितनी की जाय उतनी कम है। मान्यताओं के अनुसार यह पर्व माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने हेतु स्वोत्तम है। श्री लक्ष्मी रुपा कमला की जयन्ती तिथि होने के कारण दीपावली धन सम्पत्ति, सौभाग्य व ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री भगवती लक्ष्मी की अराधना का महा पर्व माना जाता है। दीपावली पर्व से हर सम्प्रदाप व हर धर्म के व्यक्ति परीचित हैं दीपावली का नाम आते ही हर किसी के मन में चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा उत्साह जाग जाता है। आज के इस भौतिक वादी युग में आर्थिक स्मृद्धि व धन दौलत व्यक्ति की सबसे बड़ी जरुरत है दीपावली के दिन महा निशिकाल में कुछ दुर्लभ वस्तुओं को प्रयोग कर हम लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

1. दीपावली के दिन **दक्षिणवर्ती शंख** को लक्ष्मी का स्वरुप मानकर स्थापित कर उसकी पूजा कर के धनवृद्धि में वृद्धि की जा सकती है। शंख के मध्य भाग में वरुण देवता का निवास है उसके प्रष्ठ भाग में व्रह्मा का तथा अग्र भाग में गंगा तथा सरस्वती का निवास होता है। भगवान विष्णु की अनुमति से शंख में सभी तीर्थ समाहित है। शंख को कुबेर के समान माना गया है अतः दीपावली के शुभ अवसर पर दक्षिणवर्ती शंख की स्थापना अवश्य करनी चाहिए।

2. इस पवित्र महापर्व पर **स्फटिक की माला** पर लक्ष्मी मंत्र का जाप कर धारण करने से धनाभाव दूर किया जा सकता हैं रत्नों के रहस्यमय संसार में स्फटिक को अध्यात्मिक एवं सुख समृद्धि दाता रत्न की मान्यता प्राप्त है इसके धारण मात्र से ही आत्मा का अज्ञान छटने लगता है तथा मन मस्तिष्क शान्त, निर्मल, शीतल साफ और दोष रहित होने लगते हैं इसीलिए इसे आत्मा का दर्पण कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति राजा बलि के पसीने से मानी जाती है।

3. स्फटिक श्री यंत्र की स्थापना दीपावली के शुभ अवसर पर कर के लक्ष्मी को अपने प्रतिष्ठान एवं घर में किया जा सकता है, स्फटिक में सम्मोहन शक्ति होती है दो सौ बहत्तर प्रकार के श्री यंत्रों में से हीरे के उपरत्न स्फटिक से निर्मित, समेरु पर्वत के समान मेरु पृष्ठिया श्री यंत्र सर्वश्रेष्ठ है।

4. श्वेतार्क गणपति को दीपावली के महापर्व पर घर में स्थापित करने से ऋद्धि–सिद्धि की प्राप्ति की जा सकती है।

5. इस पर्व पर लक्ष्मी **कौड़ियों** को हल्दी के रंग में रंग दें व पीले कपड़े में बांध कर पूजन कर तिजौरी, गल्ले या पूजन स्थल पर स्थापित करें।

6. गोमती चक्र को चाँदी की डिब्बी में रखकर गल्ले में रखकर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

7. हत्था जोड़ी सियार सिंघी व बिल्ली की जेर को चाँदी की डिब्बी में शुद्ध सिंदूर में डालकर तिजौरी में रखने से धन प्राप्त किया जा सकता है।

8. पारद लक्ष्मी एवं गणेश जी की स्थापना दीपावली के दिन एक लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र विछाकर करने से सम्पूर्ण विघ्न–बाधाओं का निराकरण होता है। व्यापार व नौकरी में अच्छी तरक्की होती है।

9. एक मुखी रुद्राक्ष यह स्वमनोकामना प्राप्ति के लिए होता है इसे दीपावली परपूजन स्थल पर रखने से किसी प्रकार की अनहोनी की सम्भावना नहीं रहती है।

उर्पयुकत प्रयोगों से सावधानियाँ

1. इन दुर्लभ वस्तुओं का प्रयोग ऋद्धापूर्वक करे।
2. प्रयोग स्नान कर शुद्ध अवस्था में करें।
3. प्रयोग से सम्बन्धित वस्तु असली व शुद्ध होनी चाहिए।
4. प्रयोग से सम्बन्धित वस्तु का सिद्ध होना आवश्यक है अन्यथा वह लाभ प्रद नहीं रहेगी अतः किसी योग्य विद्वान से उसे प्राप्त करें एवं उसकी स्थापना का पूर्ण विधान अवश्य समझे।
5. इन दुर्लभ वस्तुओं का प्रयोग शुभ मुहूर्त में होना अत्यन्त आवश्यक है।
6. प्रयोग से पूर्व गणेश पूजन व गुरु पूजन अवश्य करें।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

आचरण व्यवहार में परिवर्तन लाऐगा लक्ष्मी को आपके पास

डा. कविता अग्रवाल
ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

सामाजिक और भौतिक जीवन में धन अति उपयोगी है इसके महत्व को हमारे ऋषियों ने स्वीकार करके चतुस्वर्ग (धर्म अर्थ, काम, मोक्ष) पुरुषार्थ में शामिल किया था। चारों पुरुषार्थ एक दूसरे के विरोधी नहीं पूरक है। इस भौतिकवादी युग में जीवनयापन के लिए धन का होना परम आवश्यक है और धनोपार्जन के लिये श्रम के साथ–साथ धन की देवी भगवती लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए आदिकाल से यंत्र, मंत्र, तंत्र, का प्रयोग किया जाता रहा है। परन्तु इन सब के वावजूद भी लक्ष्मी प्राप्ति में बाधाएं, मन में अप्रसन्नता व अविश्वास की भावनांए रहती है 'क्यो'? हमें यह जानना उतना ही जरुरी है कि भगवती किस स्थान पर और किस तरह के आचरण के व्यक्ति के घर में स्थायी रुप से वास करती हैं

लक्ष्मी कहाँ रहती है – माता लक्ष्मी उसी घर में वास करती है जहाँ साफ–सफाई रहती है माता–पिता, गुरुजन व सभी पूज्यों का सम्मान होता हे, बच्चों पर स्नेह की वर्षा होती है, पूर्वजों को विशेष समय, उत्सवादि पर स्मरण किया जाता है तथा नित्य प्रातः व सायं कुल देवी–देवता, इष्ट देवी–देवता तथा नवग्रहों का पूजन किया जाता है। समय–समय पर भजन–सत्संग, कथा, यज्ञ आदि होते रहते है।

मृदभाषी, कर्त्तव्यनिष्ठ, ईशभक्त, कृतज्ञ, उदार, सदाचारी, धर्मज्ञ, उदार, सदाचारी, धर्मज्ञ, दानशील, क्षमाशील, बुद्धिमान गुणों से सम्पन्न व्यक्तियों के घर में लक्ष्मी का निवास होता है।

जो अनाज का सम्मान करते है और घर आए अतिथि का सम्मान करते है उनके घर में लक्ष्मी निश्चित रुप से रहती है। जो नित्य स्नान करता है, स्वच्छ वस्तु धारण करता है, जो दुसरी स्त्रियों पर कुदृष्टि नहीं रखता उसके जीवन तथा घर में लक्ष्मी का वास होता है।

जिसकी स्त्री सुंदर सुशील हो, जिसके घर में कलह नहीं होता हो तथा कन्याओं का सम्मान करने वाला हो उस व्यक्ति के घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है।

जिसके घर में पशु–पक्षी निवास करते है। जो घमंडी नहीं होता, जो दूसरों के प्रति प्रेम रखता है, जो दूसरों के दुख में दुखी होता है, जो व्यक्ति असत्य भाषा नहीं करता है उसके घर में लक्ष्मी का वास होता है।

आंवले के फल में, गोलर में, शंख में, कमल में और श्वेत वस्त्र में लक्ष्मी का वास होता है।

जो गया धाम में, कुरुक्षेत्र में काशी में, हरिद्वार में अथवा संगम में स्नान करता है, वह लक्ष्मीवान होता है। जो एकादशी तिथि को भगवान विष्णु को आंवला फल भेंट करता है, वह सदा लक्ष्मीवान बना रहता है। जो स्त्री पति का सम्मान करती है उसकी आज्ञा का उल्लघन नहीं करती, घर में सबको भोजन कराकर फिर भोजन करती है, उस स्त्री के घर में सदैव लक्ष्मी का वास रहता है।

जो स्त्री सुंदर, हरिणी के समान नेत्र वाली, पतली कमर वाली, सुदंर केश, श्रृंगार करने वाली, धीरे चलने वाली और सुशील व संस्कारी हो, उसके शरीर में लक्ष्मी वास करती है। जो घर में कमलगट्ठे की माला, लघु नारियल, दक्षिाणावर्त्त शंख, पारद शिवलिंग, श्वेतार्क गणपति, मंत्रसिद्ध श्रीयंत्र, कनक धारा यंत्र, कुबेर यंत्र, आदि स्थापित कर नित्य उनकी पूजा करता है, उसके घर में लक्ष्मी पीढ़ियों तक वास करती है।

लक्ष्मी कहाँ नहीं रहती है – जो लोग आलसी जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखते भ्रष्टाचारी, चोर, कपटी, षणयन्त्रकारी दूसरे के धन पर बुरी नजर रखने वालों के पास लक्ष्मी नहीं रहती।

जो व्यक्ति गुरु का अनादर करता है, जो गुरु के घर चोरी करता हे, जो गुरु पत्नी पर बुरी नजर रखता ळै, उसके जीवन और घर में लक्ष्मी नहीं रहती।

जो व्यक्ति देवताओं को बासी पुष्प अर्पित करता है, जो गंदा रहता है जो टूटे–फूटे या फटे आसन पर बैठता है, जो देवताओं की पूजा नहीं करता उनके घर में लक्ष्मी का वास नहीं होता।

जो व्यक्ति एक पांव से दूसरा पांव रगड़ कर धोता है, जो गंदे स्थान पर सोता है जो दिन में सोता है जो सायंकाल में स्त्री के साथ सहवास करता है, सूर्योदय के बाद तक सोने वाला पर–स्त्रीगमन करने वाले को लक्ष्मी त्याग देती है। मांसाहारी तथा नशीले पदार्थो का सेवन करने वालों के साथ लक्ष्मी नहीं रहती है।

जिसका कोई गुरु नहीं होता तथा जो व्यक्ति पुरुषार्थहीन और

शेष पेज 17 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

!!धन तेरस!!

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

कार्तिक कृष्ण पक्ष धन तेरस को गृह स्वामिनियाँ, बाल, वृद्ध अपने गृह को सजाते–सँवारते है और लिपाई–पुताई से स्वच्छ और मनोहरी बना देते हैं। घरों की दीवारों पर विभिन्न देवी–देवताओं और प्राकृतिक रंगों से पूर्ण सुंदर और आकर्षक चित्र लगाते हैं। इस दिन सायं काल की बेला में माताएँ–बहनें मंगल–कल्याण के लिए देव स्थानों, घर के कोनों, द्वारों तथा चौराहों आदि पर घी तथा तेल, या सरसों के तेल का दीपक भी जलाती हैं। दीपक में नयी रुई बत्ती का भी विशेष महत्व है। स्कंदपुराण का मत है किः–

कार्तिकस्यासितें पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति।।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के निशा मुख में घर के बाहर यम का दीपक जलावें, तो इससे अपमृत्यु का विनाश हो जाता है। दीप जलाते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करेंः–

मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन श्यामया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात्सुर्यजः प्रीयतां मम।।

अर्थात्, मृत्यु पाश और दंड काल तथा श्याम सहित यमराज त्रयोदशी के दीप दान से मेरे पर प्रसन्न हों। कहीं–कहीं यम दीपक को दक्षिण दिशा में जलाने की परंपरा है और इसे अनाज की ढेरी पर रख कर फूटी कौड़ी भी दीपक में डालते हैं। यम दीपक को जलाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि मुँह दक्षिण दिशा की ओर ही रहे तथा दीपक घर के बाहर ही जलावें। एक बार जो तेल डाल दिया जाता है, जब तक यह तेल सपाप्त न हो जाए, तब तक कहीं–कहीं इस दीपक की निगरानी पर बालकों को भी बिठा देते हैं। तेल समाप्त होने पर जब बत्ती जलने लगे, तब कौड़ी को निकाल कर घर में आ जाते हैं। सभी दीपकों को जलाते समय दीप पूजन भी अवश्य करें। यम दीपक को जलाने से यमराज प्रसन्न होते है और यमराज की पीड़ा प्राप्त नहीं होती, वरन् जिस प्रकार 'सावित्री' को वरदान दिया था, उसी प्रकार अभीष्ट वर की प्राप्ति होती है।इस दिन एक समय भोजन का व्रत रखने से धन–धान्यादि, पुत्र–पौत्रादि और अंखड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इस दिन ही देव–दानवों के द्वारा समुद्र मंथन के समय 'धनवंतरि वैद्य' समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रगट हुए थे। इसलिए इस धन तेरस को 'धनवंतरि जयंती' भी कहते हैं। इस दिन कोई किसी को अपनी वस्तु उधार नहीं देता। इसके उपलक्ष्य में सभी परिवारजन बाजार से नये–नये वस्त्र, आभूषण बर्तनादि खरीद कर अपने–अपने घरों में लाते हैं। इसी दिन घर में लक्ष्मी का आवास मानते हैं। इसके संबंध में एक सुंदर कथा इस प्रकार हैः–

कथा–एक समय अचिन्त्य शक्तियों के स्वामी जगत् रचयिता भगवान् विष्णु, लक्ष्मी सहित, मृत्यु लोक की छटा निहारने और अपने भक्तों के कल्याणार्थ मृत्यु लोक में आये। कुछ देर बाद भगवान् लक्ष्मी से बोले कि मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूँ, तुम उधर मत देखना। इतना कह कर जैसे ही भगवान् मार्ग पर बढ़ने लगे, तैसे ही लक्ष्मी भी पीछे–पीछे चलने लगीं। कुछ देर चलने पर लक्ष्मी ने देखा कि बड़े ही सुंदर–सुंदर पीत पुष्पों से परिपूर्ण सरसों के खेत हैं तथा उन खेतों के समीप ही ईख (गन्ना) का खेत भी है। पीत पुष्पों की मनोहरी छटा को देख कर लक्ष्मी भी वहाँ, अपने पूर्ण श्रृंगार से युक्त हो, ईख तोड़ कर चूसने लगीं। तत्क्षण भगवान् लौटे और यह देख लक्ष्मी पर क्रोधित हो कर श्राप दिया कि जिस किसान का यह खेत है, बारह वर्ष तक उसकी सेवा करो। ऐसा कह कर यहाँ जा कर, उसे धन–धान्य से पूर्ण कर, उसकी सेवा में तत्पर हो गयीं।

बारह वर्षो का समय पूरा हुआ। लक्ष्मी जी जाने को तैयार हुई, तो किसान ने रोक लिया। भगवान् जब किसान के यहाँ लक्ष्मी को बुलाने आये, तो किसान ने लक्ष्मी को जाने नहीं दिया। तब भगवान् बोलेः–'तुम परिवार सहित गंगा में जा कर स्नान करो और इन कौड़ियों को जल में छोड़ देना। जब तक तुम नहीं लौटोगे, तब तक मैं लक्ष्मी को नहीं ले जाऊँगा। किसान ने ऐसा ही किया।जैसे ही किसान ने गंगा में कौड़ियाँ डालीं, वैसे ही गंगा जी में से चतुर्भुज (चार भुजाएँ) निकले और कौडियाँ ले कर चलने को उद्यत हुए। तब किसान ने ऐसा आश्चर्य देख गंगा जी से पूछा कि ये चार भुजाएँ किसकी हैं? गंगा जी ने बताया कि हे किसान! ये चार हाथ मेरे ही थे। तूने जो कौड़ियाँ भेंट की है, वे किसकी दी हुई हैं? किसान बोलाः– मेरे घर में दो सज्जन आये हैं, उन्होंने ही दी हैं

गंगा जी बोलीः– तुम्हारे घर जो स्त्री है, वह लक्ष्मी है और पुरुष विष्णु भगवान् है! तुम लक्ष्मी को न जाने देना, वर्ना पुनः पूर्व की तरह निर्धन हो जाओगे। यह सुन जब वह घर लौटा, तो भगवान् ने बोला कि लक्ष्मी जी को नहीं जाने दूँगा।

शेष पेज 17 **पर**.....

आर्थिक समृद्धि के लिए दीपावली पर करें विशेष स्थापना

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर,

दीपावली आते ही लोग अक्सर लक्ष्मी जी के लिए तरह–तरह के प्रयास करते हैं कि कैसे उनके घर में वैभव धन सम्पदा सुख, शान्ति आये और इसके लिए वह दीपावली पर तरह–तरह की पूजा और उपाय करते हैं। आज के इस भौतिकवादी युग में जिसे देखो वह दौडा चला जा रहा है। किसी के पास समय नहीं हैं कि पीछे मुड़कर देख ले। सभी इस दौड़ में शामिल है और क्यों न हों क्योंकि आज के समय की सबसे बड़ी जरुरत है–हम बात कर रहे हैं आर्थिक समृद्धि की, धन की। आज व्यक्ति की सबसे बड़ी जरुरत वहीं है। जीवन में सौभाग्य एवं एश्वर्य सुख–समृद्धि की प्राप्ति के लिए दीपावली पर इन चमत्कारी व प्रभावशाली यंत्र, शंख, स्फटिक की स्थापना करें और खुद ही सौभाग्यशाली और ऐश्वर्ययुक्त महसूस करें। फैंक्ट्री, दुकान आइि जगह पर क्या–क्या स्थापित कर सकते हैं।

स्फटिक श्री यंत्र–स्फटिक के श्रीयंत्र की स्थापना करने से धन–धान्य से पूर्ण रहते है। इसके दर्शन करने से ही व्यक्ति धन्य हो जाता है। स्फटिक पर बना श्री यंत्र अत्यन्त शुभ माना जाता है। श्रीयंत्र को स्थापित करने व पूजा करने से सुख–समृद्धि, ऐश्वर्य, कीर्ति की प्राप्ति होती है।दीपावली पर अपने घर, व्यवसाय, फैक्टी, ऑफिस आदि जगहों पर श्री यंत्र स्थापित करें, निश्चित ही लक्ष्मी जी का आगमन अवश्य होगा। श्री यंत्र को स्थापित करने की विधि है– श्री यंत्र को चावलों से बनें अष्ट बल पर रखें और उसमें लक्ष्मी जी का ध्यान करें। श्री यंत्र को पंचामृत से स्नान करायें और श्री सूक्त, कनक धारा का पाठ करें। उसके बाद प्रतिदिन श्री यंत्र की पूजा करें।

स्फटिक/पारद के श्री लक्ष्मी–गणेश जी – स्फटिक/पारद के बने लक्ष्मी–गणेश की स्थापना करने से ज्ञान, बुद्धि, विद्या ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। व्यापार में अच्छी तरक्की होती है। स्फटिक एक सिद्ध रत्न व पारद एक शुद्ध धातु माना जाता है। यह बुद्धि, विद्या धन को बढाने बाला रत्न है। बुद्धि के देवता गणेश जी और धन–ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी जी की मूर्ति का विशेष महत्व है इससे निश्चिय हो बुद्धि और कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। इन्हे स्थापित करने की विधि है। स्फटिक/पारद के लक्ष्मी–गणेश को पंचामृत से स्नान कराके, कपडें से पोंछकर घर या व्यवसाय स्थल पर लाल कपड़े पर स्थापित करें उसके बाद अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, दक्षिणा आदि से पूजन करें एंव प्रतिदिन उनका पूजन दर्शन करते रहें। निश्चित ही एक विशेष फल प्राप्त होगा।

कुबेर यंत्र–धन, सम्पत्ति के अधिपति श्री कुबेर देव है जो समस्त संसार की भौतिक संपदा का संचालन करते हैं। कुबेर यंत्र की स्थापना से घर और व्यवसाय में आर्थिक उन्नति होती हैं। अक्सर लोग दीपावली पर धन के देवता कुबेर देव को भूल जाते है। जबकि सच यह है। कि लक्ष्मी जी को स्थाई रखने के लिए कुबेर यंत्र को स्थापित करना चाहिए। कुबेर यंत्र को स्थापित करने की विधि हैं– प्रातः स्नान करके निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करके अपने घर। व्यापार स्थल के पूजास्थल में केसर मिश्रित दूध से धोकर स्थापना की जाती हैं। कुबेर यंत्र के सामने यदि नित्य **''यक्षाय कुबेराय धन धान्य समृद्धि करो पुण्य पुण्य नमः''** की एक माला जप करें तो उसके घर व व्यवसाय में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होती है।

दक्षिणावर्ती शंख–दक्षिणावर्ती शंख ऐश्वर्य एवं सुख–समृद्धि का प्रतीक होता है। इस शंख का ऊपर से मुख

शेष पेज 18 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

कार्य सिद्धि एवं आर्थिक समृद्धि के लिए दीपावली पर करे अचूक प्रयोग

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**

दीपावली का पावन त्यौहार **''कार्य सिद्धी''** एवं **''आर्थिक समृद्धि''** सम्बन्धित प्रयोगों को सफलता पूर्वक सिद्ध करने के लिए अबुझ मुर्हुत हैं। छोटे–छोटे प्रयोगों को करके भी हम आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आप भी अपने अनुकूल एक या एक से अधिक प्रयोगों को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करें। आपकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी और माँ लक्ष्मी की कृपा अवश्य प्राप्त होगी।

प्रयोग नम्बर 1 : – आर्थिक वृद्धि के लिए सदैव शनिवार के दिन गेहूँ पिसवाये तथा गेहूँ में एक मुठ्ठी काला चना अवश्य डालें।

प्रयोग नम्बर 2 : – यदि आपके घर में पहली संतान पुत्र के रूप में प्राप्त हो तो उसका दाँत जब भी गिरे उसे जमीन पर गिरने से पहले हाथ से उठाकर पवित्र स्थान पर रख दें और गुरू पुष्य नक्षत्र में दाँत को गंगा जल से शुद्ध करें और उसे धूप–दीप दिखाकर चाँदी की डिबिया में रख लेवें। इस डिबिया को सदैव अपने पास रखें या अपने धन स्थान में रखें। जब बच्चे के जन्म नक्षत्र आवे तो पुनः दाँत को शुद्ध करें और उसे धूप–दीप दिखायें ऐसा प्रत्येक माह करें। आपके पास धन की कोई कमी नहीं होगी।

प्रयोग नम्बर 3 :– यदि आप आर्थिक रूप से बहुत ही समस्याग्रस्त हैं तो 21 शुक्रवार '' वैभव लक्ष्मी '' का पूजन करें, व्रत करें और एक वर्ष से कम आयु की 5 कन्याओं को खीर एवं मिश्री प्रत्येक शुक्रवार को खिलाये। कुछ समय बाद ही आपकी परेशानी कम होने लगेगी।

प्रयोग नम्बर 4 :– यह एक ऐसा प्रयोग हैं जिससे आर्थिक सम्पन्नता स्थायी रूप से प्राप्त की जा सकती हैं। आप यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को करें। इसे आप स्वयं भी कर सकते हैं या किसी योग्य ब्राह्मण से करवा सकते हैं।

दीपावली की रात्रि में एक मोती शंख या दक्षिणावर्ती शंख को दीपावली पूजन के साथ ही पूजें। किसी भी लक्ष्मी मंत्र की पाँच माला या '' श्री सुक्त '' के सात पाठ करें। शंख को पूजा स्थान पर ही रहने दें। अगले दिन प्रातःकाल स्नान करके लाल आसन पर बैठकर अपने सामने शंख को रख कर उसी मंत्र का या **''श्री सुक्त''** का पाठ करें। प्रत्येक मंत्र के के बाद एक साबुत चांवल का दाना शंख में डालें। इस प्रकार आप 108 बार मंत्र पाठ कर इतने ही चांवल के दाने शंख में डालें। इस प्रकार प्रत्येक दिन पाठ करें। यह आपको तब तक करना हैं जब तक कि शंख चांवलों से न भर जाये। जिस दिन भांख भर जाये उस दिन शाम को एक

शेष पेज 18 **पर**.....

राशि के अनुसार लक्ष्मी पूजन

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

दीपावली पर्व पर माँ लक्ष्मी का पूजन किया जाता है। यह पूजन प्रदोषकाल एवं स्थिर लग्नों में करना श्रेष्ठ होता है। कुछ स्थानों पर चौघडियॉ के आधार पर भी मुहूर्त निकाले जाते हैं। यह मुहूर्त केवल समय शुद्धि के आधार पर निकाले जाते है। इनमें से आपकी राशि के आधार पर कौन–सा मुहूर्त अच्छा है? यह जानने के लिए प्रस्तुत लेख में अपनी राशि के अनुसार दिए गए समय पर माँ लक्ष्मी का पूजन करें। अपनी राशि के अनुसार शुभ समय पर माँ लक्ष्मी का पूजन करने से व्यक्ति को विशेष लाभ मिलता है।

मुहूर्त की महिमा अपार होती है। शुभ मुहूर्त पर किया गया कार्य शीघ्र फल देने वाला होता है। वैसे तो दीपावली पर किसी भी समय माँ लक्ष्मी का पूजन किया जा सकता है, लेकिन विशेष शुभ मुहूर्त में की गई पूजा शीघ्र फल प्रदान करने वाली है।

1. **मेष राशि हेतु मुहूर्त** – मेष राशि वाले व्यक्तियों को अर्धरात्रि के पश्चात् सिंह लग्न में माँ लक्ष्मी का पूजन करना चाहिए।

2. वृषभ राशि हेतु मुहूर्त– वृषभ राशि वाले व्यक्तियों को अपनी ही राशि के लग्न अर्थात् वृषभ लग्न में दीपावली पर माँ लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए।

3. मिथुन राशि हेतु मुहूर्त– मिथुन राशि वाले व्यक्तियों का प्रदोषकाल में दीपावली पर माँ लक्ष्मी का पूजन करना चाहिएं

4. कर्क राशि हेतु मुहूर्त– कर्क राशि वाले व्यक्तियों को सिंह लग्न में दीपावली के दिन माँ लक्ष्मी का पूजन करना चाहिए।

5. सिंह राशि हेतु मुहूर्त–सिंह राशि वाले व्यक्तियों को अपनी ही राशि के लग्न अर्थात् सिंह लग्न में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन करना चाहिए।

6. कन्या राशि हेतु महूर्त–कन्या राशि वाले व्यक्तियों को वृषभ लग्न में दीपावली पर लक्ष्मी पूजन करना चाहिए।

7. तुला राशि हेतु मुहूर्त– तुला राशि वाले व्यक्तियो को वृषभ लग्न में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन करना चाहिए।

8. वृश्चिक राशि हेतु मुहूर्त– वृश्चिक राशि वाले व्यक्तियों को दीपावली के दिन सिंह लग्न में माँ लक्ष्मी की पूजा–अर्चना करनी चाहिए।

9. धनु राशि हेतु मुहूर्त– धनु राशि वाले व्यक्ति दीपावली पर सिंह लग्न में माँ लक्ष्मी की पूजा–अर्चना करें, तो उन्हें उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

10. मकर राशि हेतु मुहूर्त– मकर राशि वाले व्यक्तियों को वृषभ लग्न में दीपावली पर माँ लक्ष्मी की पूजा–अर्चना करना श्रेष्ठ होता है।

11. कुम्भ राशि हेतु मुहूर्त– कुम्भ राशि वाले व्यक्तियों को वृषभ लग्न में दीपावली के दिन माँ लक्ष्मी की पूजा–अर्चना करनी चाहिए।

12. मीन राशि हेतु मुहूर्त– मीन राशि वाले व्यक्ति दीपावली पर यदि सिंह लग्न में माँ लक्ष्मी की पूजा–उपासना करें, तो उन्हें उत्तम फल प्राप्त होते हैं। ❋❋❋

दीपावली पूजन विधि

श्री गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ अथवा चित्र, रोली, चावल, फूलमाला, पान, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची, कलावा, धूपबत्ती, कपूर, रूई, घी, माचिस, मीठा तेल, खील-बतासे, पंच मेवा, खाँड़ के खिलौने, मिठाई, नुक्ती के लड्डु,फल, गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, बूरा, जनेऊ, घिसा हुआ चन्दन, रोली, बसने की पुड़िया, गोला, नारियल पानी वाला, वस्त्र चढाने वाले और रूपये थाली में सजा कर रखें।

श्री हनुमान जी

श्री सरस्वतीजी	श्री लक्ष्मीजी	श्री गणेशजी
महा धनदाता लक्ष्मी यंत्र	कमलगट्टा की माला	मनोकामना पूर्ति यंत्र
लक्ष्मी यंत्र	श्री यंत्र	कुबेर यंत्र
दक्षिणवर्ती शंख	गोमती चक्र	कोड़ी

भवन के मुख्य द्वार पर

॥ श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः॥

शुभ 卐 लाभ

सिन्दूर में घी मिलाकर अनामिका जिसमें अंगूठी पहनते है उस उंगली से लिखें। एक साबुत बताशा सतिये के बीच में चिपका दें।

दीपावली पूजन कैसे करें

दीपावली लक्ष्मी जी का पर्व माना गया है। प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिये लक्ष्मी (धन) आवश्यक है, इस पूजा विधि का आधार यही मंत्र है।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ॥

मंत्र का सरल भाव है कि मै मंत्र, क्रिया, विधि और भक्ति आदि नहीं जानता हूँ जैसे भी आपकी पूजा की है आप उससे प्रसन्न होकर मेरा कल्याण करें।

पूजा विधि :- सबसे पहले स्नान करके नया जनेऊ पहने, नये अथवा धुले हुए कपड़े पहने, टोपी लगावें। पूरब-पश्चिम अथवा उत्तर की ओर मुँह करके अपने आसन पर बैठ जायें। पत्नी को सीधे हाथ की ओर बैठावें। चुटिया में गांठ लगावें। चुटिया न होने पर चुटिया के स्थान को छू लें।

अपने सामने चौकी या पटरा अथवा जमीन पर अपने सीधे हाथ की ओर गणेश जी एवं उल्टे हाथ की ओर लक्ष्मी जी को चावल डाल कर विराजमान करें। उलटे हाथ की ओर घी का तथा सीधे हाथ की ओर मीठे तेल का (तिल का तेल) दीपक चावल डालकर रख दें।

अपने सामने पूजन की थाली, पंचपात्र आचमनी कटोरी, चम्मच आदि रख लें। दोनों दीपक एवं धूपबत्ती जलावें। चावल हाथ में लेकर हाथ जोड़ें और कहें- **'हे दीपक देवता** जब तक हम पूजन करें तब तक आप जलते रहना। चावल दीपकों के पास चढ़ा दें।

पान अथवा चम्मच से सबके ऊपर **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** कहकर पानी छिड़क दें। इसे पवित्रकरण कहते हैं। उल्टे हाथ से सीधे हाथ में जल लें और ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय कह कर तीन बार पी लें। (पानी पीकर सिर पर हाथ नहीं रखें) हाथ धो लें। यह आचमन है। जरा से चावल उल्टे हाथ में रखकर सीधे हाथ से ढक लें दस बार ''**ओउम्**'' कहें और अपने चारों ओर छोड़ दें इसे दिशा पूजन अथवा दिग्बन्धान कहते है।

नवग्रह की पूजा करें। चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। लड्डू, मिठाई, खील-बतासे चढ़ा दें।

गणेशजी विघ्नविनाशक, बुद्धि और विवेक के देवता हैं हर काम में सर्वप्रथम इनका पूजन किया जाता है। गणेश जी के पूजन का भाव है हम बुद्धि से धन अर्जित करें एवं विवेक से उसे खर्च करें। बुद्धिहीनता, अविवेकी ढंग, गलत तरीके से न तो धन कमायें न इस प्रकार खर्च करें। **ॐ एकदन्ताय विदमहे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रयोदयात्॥** अथवा **श्री गणेशायः नमः** कहकर गणेश जी पर चावल छोड़ दें।

प्रत्येक पूजा में गणेश जी के आवाहन के बाद संकल्प करने की परम्परा है। यह संकल्प क्या है ? जब हमारे मन में कोई विचार उठता है तब बुद्धि एवं हृदय से स्थिर (पक्का) करते हैं। ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) ने शरीर के अंगों को प्रेरित किया और विचार कार्य रूप में बदल जाते हैं। इसे संकल्प कहते हैं। अच्छे कार्य उद्घोषणापूर्वक किये जाते हैं। कुकृत्य (बुरे काम) छिपकर करने का मन होता है कोई देख न ले अच्छे संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, दैवीय शक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता है। संकल्प में सम्वत, मास, पक्ष, तिथि, दिन, पर्व, गोत्र एवं नाम बोलकर अहम्करिष्ये कहा जाता है।

सीधे हाथ में जल, चावल, फूल, रुपये रखें पत्नी साथ हों तो उनका हाथ अपने हाथ के नीचे लगावें, बोलें-श्री विष्णु, श्री विष्णु, श्री विष्णु। शुभ सम्वत् 2066, कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां शनिवासरे अमुक गोत्रेत्पन्न (गोत्र और अपना नाम बोलें) पत्नी साथ हो तो सप्तनीकोहम् परिवार हो तो सपरिवारस्योहंम, (यदि मित्र मण्डली हो तो)इष्टमित्रसहितोहम्। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश लक्ष्मी पूजनम् अहम करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ में रखी वस्तुएँ गणेश जी के समीप रख दें। अब हाथ में चावल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

''**ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् अथवा ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥** कहकर लक्ष्मी जी पर चावल चढ़ावें।

आवाहन्- सर्व सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी धन धान्य समृद्धि दाता माँ मेरे इस स्थान पर आकर आसन पर विराज कर मेरे द्वारा

की जाने वाली पूजा स्वीकार करें। पुष्पासनम् सर्मपयामि बोल कर चावल, फूल चढ़ा दें। एक दौने में फूल, चावल, जल गणेश जी -लक्ष्मी जी के आगे रखकर कहें अर्घ्यम समर्पयामि गंगाजल (पानी) डौने में रखकर कहें ''आचमनीयम् समर्पयामि ''तदन्तर शुद्ध जल से स्नान करावें।'' स्नानम् समर्पयामि ''इसके बाद पारद के गणेश जी -लक्ष्मी जी या चाँदी का रूपया कटोरे में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा इच्छानुसार चढ़ावें और कहें'' पंचामृत स्नानम् समर्पयामि ''शुद्ध जल से स्नान करावें'' स्नानम् समर्पयामि ''वस्त्र से पोंछकर पात्र में रख लें और नवीन (नया) वस्त्र पहनावें'' वस्त्रम् समर्पयामि ''मंगल प्राप्ति हेतु मंगलसूत्र (मौली) चढ़ावें'' मंगल सूत्रम् समर्पयामि ''गणेश जी को जनेऊ पहनावें'' यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ''लक्ष्मी जी को मोती की माला पहनावें'' मुक्ता मालाम् समर्पयामि ''गणेश जी पर चन्दन लक्ष्मी जी पर रोली'' गंधम् समर्पयामि ''चावल लगावें'' अक्षताम् समर्पयामि ''फूलमाला पहनावें'' पुष्पमाल्याम् समर्पयामि ''मीठा, खी, बतासे, खाड़ के खिलौने, पॉचों मेवा, आदि थाली में रखकर कहें'' भोजनम् समर्पयामि ''जल चढ़ावें'' आचमनीयम समर्पयामि ''फल चढ़ावें'' फल समर्पयामि ''गोला या नारियल चढ़ावें'' अखंड ऋतुफलम् समर्पयामि ''पान, सुपारी, लौंग, इलायची, कपूर'' ताम्बूल पुंगीफल आदि समर्पयामि ''दक्षिणा चढ़ावें'' शुभ दक्षिणाम् समर्पयामि ''प्रणाम करके मन से परिक्रमा करें। पुष्प हाथ में लेकर प्रार्थना करें।

श्री गणेशाम्बिका प्रसन्न होकर मेरी तथा मेरे परिवार, इष्ट मित्र एवं सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की रक्षा करें तथा भगवती लक्ष्मी माँ स्थिर रूपेण इस भवन में एवं व्यापारादि के स्थान में निवास कर सर्वत्र हर्ष विजय प्रदान करें।

कुछ व्यक्तियों के यहाँ हठरी का पूजन होता है ''हठरी पर दीपक जलावें चावल हाथ में ले लें और कहें ''हठरी दैव्यै आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ''चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। रूपया, लड्डू, मिठाई, खील-बतासे, हठरी में रख दें। दुकान, कारखाना, मिल, दफतर गद्दी आदि स्थानों पर बही खाता, कलम, दवात, तिजोरी (कैश बाक्स, गल्ला), मशीन, तराजू, बॉट आदि का पूजन होता है उसे ऊपर लिखे क्रमानुसार अथवा केवल चावल या खील चढ़ाकर सम्पन्न करें।

इसके बाद कमल गट्टे की माला से कुवेर मंत्र का 108 बार जाप करें।

''यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि
पतये धनधान्य समृद्धि मे देहदापय स्वाहा''

तिजोरी, कैश बॉक्स या गल्ले में बसने की पुड़िया (पंसारी के यहॉ मिलेगी) लाल कपड़े में बाँध कर रख दें। अब एक थाली में ग्यारह दीपक तेल के जलावें और खीलें हाथ में लेकर कहें'' ॐ दीपेभ्यो नमः ''खीलें दीपकों पर चढ़ा दें। घर में, भगवान के मन्दिर में , रसोई में, सब कमरों में, आँगन, छत, द्वार, नाली के पास, चौराहा, कुँआ, हैण्डपम्प, मन्दिर, पीपल के पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर रखें। थाली में सतिया लगाकर तथा फूल डालकर आरती करें। ❋❋❋

दीपावली पर्वोत्सव पर अभिमन्त्रित धन प्रदायक पूजन सामग्री

पं विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य

भारत में नहीं अपितु विदेशों में भी दीपावली के इस शुभ पर्व को बहुत हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन लक्ष्मी–गणेश का पूजन कर सभी लक्ष्मी जी से धन व गणेश जी से बुद्धि की कामना करते है। घर में लक्ष्मी जी का आगमन हो तथा लक्ष्मी जी का वास सदैव घर में बना रहे इसके लिए मनुष्य यथा सम्भव लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने हेतु उपाय करता है।

धन लाभ व लक्ष्मी जी की कृपा हेतु वैदिक कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा लक्ष्मी सूक्त, श्री सूक्त, कनकधारा तथा लक्ष्मीजी के विशिष्ट मंत्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके तिजौरी या अलमारी में रखने हेतु पूजन सामग्री तैयार की गयी है। जिससे धन स्थिर रहेगा व लक्ष्मी जी का वास बना रहेगा।

पूजन हेतु पूजा किट- रोली, चावल, बतासे, कलावा, सुपारी, लौंग, इलायची, धूपबत्ती, कपूर, इत्र, जनेऊ, सिन्दूर, कमलगट्ठा धन लाभ हेतु तिजौरी में रखने हेतु अभिमन्त्रित पूजन सामग्री।

सिद्ध श्रीयंत्र, अभिमन्त्रित–सुपारी, कमल गट्ठा, कौडी, गौमती चक्र, काली हल्दी, गुंजा, लघु नारियल, अक्षत, धनियाँ, रुद्राक्ष।

श्री यंत्र- लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्री यंत्र को अचूक माध्यम माना जाता है श्री का अर्थ ही लक्ष्मी है अतः शुभ मुहूर्त में सिद्ध श्री यंत्र स्थापित करने से लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती है।

गुँजा- गुँजा अभिमन्त्रित कर शुभ मुहुर्त में धन स्थान पर रखने से धन व समृद्धि प्राप्ति होती है।

गोमती चक्र- अभिमन्त्रित गोमती चक्र लालवस्त्र पर रख लक्ष्मी जी के समक्ष रखने से लक्ष्मी जी प्रसन्न रहती है तथा धन स्थान पर रखने से धन की वृद्धि होती है।

काली हल्दी- काली हल्दी सिद्ध कर घर में स्थापित करने से शत्रुओं का नाश होता है। टोने–टोटकों से बचाव होता है तथा कार्य सिद्ध होते है।

लघु नारियल- लघु श्रीफल अभिमन्त्रित कर धन स्थान पर रखने से धन वृद्धि होती है।

कमलगट्ठा- कमल लक्ष्मी जी को अतिप्रिय है अतः कमल बीज से लक्ष्मीजी का हवन करने से धन लाभ होता है तथा अभिमन्त्रि कर रखने से लक्ष्मी जी की कृपा रहती है।

कौड़ी- कौडी प्राचीन काल में लक्ष्मी स्वरुप में ही प्रयोग किया जाता है अभिमन्त्रित कौडी धन स्थान में रखने से धन आगमन होता है।

अक्षत- अक्षत लक्ष्मीजी को अतिप्रिय है। अक्षत से बनी खीर द्वारा लक्ष्मीजी का हवन करने से लक्ष्मीजी का वरदान मिलता है। अभिमन्त्रित अक्षत तिजौरी में रखने से लक्ष्मीजी स्थिर बनी रहती है।

यह पूजा किट मिलने का स्थान ''**भविष्य दर्शन**'' संस्थान हैं। जहाँ से आप यह पूजा प्राप्त कर सकते हैं। ❋❋❋

राशियाँ ही खोलती है धन के द्वार

डॉ. श्रीमती रेखा जैन 'आस्था'
ज्योतिष प्रभाकर वास्तु शास्त्राचार्य

प्रत्येक व्यक्ति की प्रथम इच्छा सुखमय जीवन होती है। और इसके लिए वर्तमान समय में पर्याप्त धन की आवश्यकता होती है। आज के लिए भौतिकवादी युग में व्यक्ति कम से कम समय में अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहता है। किन्तु हर प्रकार का प्रयास करने पर भी अधिकाशं लोगों की मन वाच्छित धन प्राप्त नहीं हो पाता। इसके लिए आने वाले दीपावली पर्व पर अपनी राशि अनुरुप उपाय करने पर काफी कुछ समस्या का समाधान हो सकता है।

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)

–शुक्र यंत्र पर जरकिन शनि यंत्र पर नीली जड़वा कर दोनों ग्रहों के मंत्रों से यंत्रों को अभिमंत्रित कर घर के पूजास्थल पर स्थापित कर नित्य दर्शन व पूजन करना चाहिए।

–श्वेतार्क की जड़ को निष्ठापूर्वक प्राण–प्रतिष्ठित करके पूजा स्थल पर रखे। और नित्य महालक्ष्मी के मंत्र का जाप करें।

–गणेश जी के सम्मुख व गणेश मंत्र को प्रतिदिन 5 माला से जाप करने पर धन व यश की प्राप्ति होगी।

–दीपावली के दिन चाँदी का **'श्री'** बनवाकर उसे लक्ष्मी जी के मंत्रों से अभिमंत्रित करके गले में धारण करे।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

–बुध यंत्र पर ओनेक्स और गुरु यंत्र पर सुनहला लगवा कर दोनों ग्रहों के मंत्रों से अभिमंत्रत करके घर के मन्दिर में स्थापित करें फिर नित्य निष्ठा पूर्वक पूजा करें लक्ष्मी जी की कृपा अवश्य मिलेगी।

–श्री यंत्र की प्राण–प्रतिष्ठा कर प्रतिदिन लक्ष्मी जी के मंत्र से जाप करें। दरिद्रता से मुक्ति भौतिक सुख शान्ति की प्राप्ति होगी।

–धन व यश को पाने के लिए दिपावली के दिन श्री यंत्र या लक्ष्मी यंत्र के सम्मुख श्री सूक्त का पाठ शुरु करे और नित्य प्रति करें।

–दीपावली के लिए श्री विष्णु व लक्ष्मीजी का पूजन प्रारम्भ करें और प्रत्येक शुक्रवार को करें।

मिथुन- (का, की, कू, घ, ड़, छ, के, को, हा)

–घर में लक्ष्मी जी का स्थायी निवास के लिए दिपावली के दिन महाधनदाता यंत्र को स्थापित करके नित्य पूजन निष्ठा पूर्वक करें।

–दीपावली के दिन तुलसी की पूजा करें तथा रात को कच्चे सूत को शुद्ध केसर से रंग कर लक्ष्मी मंत्र का 5 माला जाप करने के बाद कार्य स्थल पर बाँध दे उसका दर्शन प्रतिदिन करें।

–चंद्र व मंगल यंत्रों को क्रमशः मोती व मूँगा जड़वा कर ग्रहों के मंत्रों से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल पर स्थापित करें तथा प्रतिदिन उसका पूजन व दर्शन करें।

–दीपावली के दिन मंगल यंत्र के सम्मुख ऋण हर्ता मंगल स्त्रोत्र का पाठ करें तथा प्रतिदिन करें धन लाभ होगा।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)

–दीपावली के दिन सूर्य व शुक्र यंत्रों पर क्रमशः माणिक्य व जरकन लगवा कर ग्रहों के मंत्रों से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल पर स्थापित करे तथा रोजना दर्शन व पूजन करे।

–दीपावली के दिन से प्रारम्भ करके 72 दिनों तक महा लक्ष्मी मंत्र का जाप करें।

–चांदी की दो गाय की प्रतिमा बनवा कर उसे दीपावली के दिन अभिमंत्रित करके एक किसी ब्राह्मण को दान दे और दूसरी घर के मन्दिर में रखें तथा नित्य पूजन करें।

–दीपावली के दिन श्री यंत्र को सिद्ध करके मंदिर में रखे तथा प्रतिदिन श्री सूक्त का पाठ करें

सिंह- (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, ट)

–बुध यंत्र बनवा कर उस पर ओनेक्स लगवा कर बुध मंत्र से अभिमंत्रित करके मन्दिर में स्थापित करें तथा नित्य दर्शन व पूजन करें।

–सूर्दोदय से दो घन्टे के भीतर एक नारियल का गोला लेकर उसका मुँह काट ले फिर घर की सभी सदस्य उसमें बूरा, मेवे व देशी घी भरदे और उसे पीपल या बरगद के पड़ के नीचे इस प्रकार

शेष पेज 18 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in
शेष पेज 22 पर.....

धन तेरस (दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन हेतु)

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

महात्म्यः धन तेरस का त्यौहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। इस दिन भगवान धन्वंतरि क्षीर सागर से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए ये इसीलिए वैघ समाज हर्षोल्लास के साथ **'धन्वंतरिजयंती'** मनाता है। उल्लेखनीय है कि अमृत पान करने वाला प्राणी अमर हो जाता है, इसीलिए धन्वंतरि भगवान ने देवताओं को अमृत पान करवा कर अमर कर दिया था। भगवान विष्णु के अंश से अवतरित भगवान धन्वंतरि आयुर्वेद के प्रर्वतक तथा आरोग्य के देवता रुप में प्रतिष्ठित हुए है। यही कारण है कि धन तेरस के दिन दीर्घायु और स्वस्थ जीवन की कामना के लिए भगवान धनवंतरि के पूजन का विशेष महात्मय है।

पूजन विधि-विधानः- यह त्यौहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन यमराज के लिए आटे से निर्मित दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखने का विधान है। रात्री को घर की स्त्रियां इस दीपक में तेल डालकर चार बत्तिया जलाती है और जल रोली, चावल, फूल, गुड़, नैवेद्य आदि सहित दीपक जलाकर यमराज का पूजन करती है। हल जुती मिट्टी को दूध में भिंगोकर सेमर वृक्ष की डाली में लगाए और उसको तीन बार अपने शरीर पर फेर कर कुंकुम का टीका लगाए और प्रज्वलित करे।

इस दिन भगवान धन्वंतरि का विधिवत पूजन करने का विशेष महत्व है।

पौराणिक कथाः- धन तेरस की कथा का पुराणों में वर्णन इस प्रकार हुआ है एक समय यमराज ने अपने दूतों से पूछा कि क्या कभी तुम्हें प्राणियों के प्राण का हरण करते समय किसी पर दयाभाव भी आया है तो वे संकोच में पड़कर बोले नहीं महारराज! हमें दयाभाव से क्या मतलब। हम तो बस आपकी आज्ञा का पालन करने में लगे रहते हैं।

यमराज ने उनसे दुबारा पूछा, तो उन्होंने संकोच होकर बताया कि एक बार एक ऐसी घटना घटी थी जिससे हमारा हृदय कांप उठा था। हेम नायक राजा की पत्नी ने जब एक पुत्र को जन्म दिया तो ज्योतिषियों ने नक्षत्रगणना करके बताया कि यह बालक जब भी विवाह करेगा उसके चार दिन बाद ही मर जाएगा। यह जानकर उस राजा ने बालक को स्त्रियों की छाया तक से बचाने हेतु यमुना तट की एक गुफा में रखकर ब्रह्मचारी के रुप में रखकर बड़ा किया। संयोग से एक दिन जब महाराजा हंस की युवा वेटी यमुना तट पर घूम रही थी तो उस ब्रह्मचारी युवक ने मोहित होकर गांधर्व विवाह कर लिया। चौथा दिन पूरा होते ही वह राजकुमार मर गया। अपने पति की मृत्यु देखकर उसकी पत्नी विलख–विलख कर रोने लगी। उस नवविवाहिता का करुण विलाप सुनकर हमारा हृदय भी कांप उठा। हमने जीवन में कभी भी ऐसी सुंदर जोड़ी नहीं देखी थी वे दोनों साक्षात कामदेव व रति के अवतार मालूम होते थे। उस राजकुमार के प्राण हरण करते समय हमारे आंसू नहीं रुक रहे थे।

यह सुनकर यमराज ने कहा-"क्या करें विधि के विधानानुसार उसकी मर्यादा निभाकर हमें ऐसे अप्रिय कार्य करने ही पड़ते हैं।

क्या अकालमृत्यु से बचने का कोई उपाय नहीं हैं? यमदूत ने उत्सुक्तावश पूछा–यमराज बोले हां उपाय तो है अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति को धन तेरस के दिन पूजन और दीपदान विधिपूर्वक करना चाहिए। जहाँ यह पूजन होता है, वहां अकाल मृत्यु का यम नहीं सताता। कहते हैं तभी तो धनतेरस के दिन यमराज के पूजन के पश्चात् दीप दान करने की परम्परा प्रचलित हुई।

नरक चतुर्दशी (यमराज को प्रसन्न करते)

महात्मयः-जैसा कि इस व्रत को नाम से ही स्पष्ट है, नरक चतुर्दशी को किया गया पूजन और व्रत यमराज को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है जिसका उद्देश्य नरक से मुक्ति पाना है,

शेष पेज 17 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

16 अक्टूबर - 15 नवम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस माह में उदर विकार होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। मानसिक अशांति बनी रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में उदरविकार रोग होने की संभावना रहेगी। नौकरी में रुकावटें आयेंगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। निजीजन को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। धन लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इस माह में शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा परन्तु गुप्त शत्रु से बचें।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। मास के अन्त में खर्चें अधिक होंगे। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। गुप्त शत्रु से भय रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। सन्तान सुख मिलेगा। कारोबार ठीक चलेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में वायुविकार रोग होने की संभावना रहेगी। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। कारोबार या व्यवसाय ठीक चलेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– धन प्राप्ति का योग घटित होने की संभावना रहेगी। नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। बन्धु सुख प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। मास मे आपको राज भय रहेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेंगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। धन की परेशानी एवं चिन्ता रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इस मास में स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। स्थानान्तर का विचार होगा। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। आय से ज्यादा खर्चें होंगे।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। पत्नि का पूर्ण सुख एवं पत्नि पक्ष से लाभ प्राप्त होगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नबम्बर
16 शरदीय नवरात्र प्रारम्भ **17** द्वितीय नवरात्र **18** तृतीय नवरात्र, चतुर्थ नवरात्रा **19** ललिता पंचमी व्रत, पंचम नवरात्रा **20** छठा नवरात्रा **21** सरस्वती पूजन **22** दुर्गाष्टमी **23** महानवमी, **24** विजयदशमी **25** पाप कुशा एकादशी व्रत, **27** प्रदोष व्रत **29** काजौगरी व्रत, शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्री वाल्मीक जं. **31** श्रीमती इंदिरा गांधी पुण्य दिवस, सरदार बल्लभ भाई पटेल जं.	**2** करवाचौथ व्रत **7** अहोई अष्टमी **10** रमा एकादशी व्रत **11** प्रदोष व्रत, धनतेरस **12** नरक चौदश **13** दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) **14** पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दि., बाल दि. श्री गोर्वधन पूजा, (अन्नकूट) **15** भाई दूज

ग्रहारम्भ मुहूर्त
अक्टूबर–18, 24
नबम्बर– 15

गृह प्रवेश मुहूत
अक्टूबर– 18, 24
नबम्बर–15

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अक्टूबर–18, 22, 24, 29
नबम्बर–15

नामकरण संस्कार मुहूर्त
अक्टूबर–18,24,29 नबम्बर– 2,12,15,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
17 ता. सू.उ. से सू.उ. तक 20 ता. सू.उ. से सू.उ. तक 30 ता. 11:57 से सू.उ. तक	12 ता. 9:42 से सू.उ. तक

16 नवम्बर - 15 दिसम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस मास से स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। पत्नि से लाभ होगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। शत्रु का भय रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें। कारोबार ठीक रहेगा। निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। व्यवसाय मध यम रहेगा। धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। शत्रु कमजोर रहेंगे। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अपमान होने का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह में कष्ट होने का भय रहेगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। नेत्र रोग का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख मिलेगा। व्यवसाय ठीक रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। गुप्त शत्रु से सावधान रहें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा। नई योजनायें बनायेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। कारोबार ठीक रहेगा। पत्नि से लाभ होगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु कमजोर रहेंगे।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नबम्बर	दिसम्बर
16 विनायक चौथ **18** पाण्डव पंचमी **19** सूर्य षष्ठी, इंदिरागांधी जं. **20** जलराम जं., गोपाष्टमी **22** अक्षय नवमी **23** श्री सांई बाबा जं. **24** देव प्रबोधनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह **25** प्रदोष व्रत, गरुणद्वादशी (उड़ीसा) **27** बैकुण्ठ चौदस **28** पूर्णिमा, गुरुनानक जं	**1** विश्व एड्स डे **2** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, **3** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, विकलांग दिवस **4** भारतीय नौ सेना दिवस **7** काल भैरवाष्टमी व्रत, भारतीय झण्डा दिवस **9** एकादशी व्रत **10** मानवाधिकार दिवस **11** प्रदोष व्रत **13** अमावस्या व्रत **15** सरदार वल्लभ भाई पटेल पुण्य दि.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नबम्बर– नही है।
दिसम्बर – नही है।
गृह प्रवेश मुहूर्त
नबम्बर–नही है।
दिसम्बर–नही है।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
नबम्बर–18, 26, 29
दिसम्बर– नही है।
नामकरण संस्कार मुहूर्त
नबम्बर– 16, 17, 26
दिसम्बर– 9

सर्वार्थ सिद्ध योग

नबम्बर	दिसम्बर
17 ता. सूउ. से 17:24 तक 20 ता. 15:14 से सूउ. तक 25 ता. सूउ. से 24:43 तक 27 ता. सूउ. से 20:59 तक	10 ता. सूउ. से 18:31 तक

वैवाहिक जीवन पर मंगल का प्रभाव

ज्योतिर्विद सीता राम
सिंह एम.ए.एल.एल.एम.

मंगल ग्रह को सौरमंडल में सेनापति का स्थान दिया गया है। यह पुरुष ग्रह है, और हमारे शरीर में पाचन क्रिया रक्त, मांसपेशियाँ, उर्जा और साहस का कारक है। मंगल प्रदान व्यक्ति स्वस्थ, मांसल, चुस्त और उर्जावान होता है।कुण्डली में मंगल ग्रह की स्थति मुख्य रुप से वैवाहिक जीवन का सुख–दुःख दर्शाती है। कुण्डली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में मंगल की स्थिति विशेष कष्टकारक होती है। इस स्थिति को 'मंगल दोष' की संज्ञा दी जाती है। पति–पत्नी दोनों की कुण्डली में मंगल दोष होने पर ही वैवाहिक जीवन सुखी रहता है।

एक स्वस्थ व्यक्ति की सेक्स में रुचि स्वभाविक है, परन्तु मंगल (उर्जा) और शुक्र ग्रह (काम सुख) की कुण्डली में युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध और उन पर देव गृरु बृहस्पति का प्रभाव/अभाव, व्यक्ति के यौन सम्बन्ध का स्तर और तीव्रता दर्शाता है। पति–पत्नी के मध्य यौन–संतुष्टि सफल और सुखी दाम्पत्य जीवन का आधार होती है। यौन जीवन पूर्ण संतुष्ट होने पर अन्य विषमताऐं गौण हो जाती है और दाम्पत्य जीवन के विच्छेद की स्थिति नहीं आती।मंगल ग्रह की विभिन्न भावों में स्थिति का प्रभाव इस प्रकार होता है।

1. मंगल के प्रथम भाव में होने पर जीवन साथी व्यक्ति के प्रेम में खोया रहता है। वह उसके प्रति किसी और का आकर्षण सहन नहीं करता। अपनी ओर से जीवन साथी से प्यार और निष्ठा बनाए रखने पर पूर्ण वैवाहिक सुख की प्राप्ति होती है।

2. दूसरे भाव में मंगल व्यक्ति को यौन–क्रिया में आक्रमक वृत्ति देता है। वाणी दोष के कारण वह अपने मन की भावनओं की सहज प्रकार से अभिव्यक्ति नहीं कर पाता, जिससे जीवन साथी के मन में अतृप्ति की भावना पनपती है। अतः व्यक्ति खुले दिल से जीवन साथी के प्रति प्रेम का प्रदर्शन कर वैवाहिक जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकता है।

3. तीसरे भाव में मंगल होने पर जीवन साथी अपनी भावनाओं को दर्शाने में असफल रहता है। अतः आपसी रिश्तों और वैवाहिक सुख बनाए रखने के लिए जीवन साथी की भावनाओं को उभारना चाहिए।

4. चौथे भाव में मंगल होने पर जीवन–साथी स्वार्थी होता है। उसमें रति–क्रिया की प्रबल इच्छा होती है। अपनी सुख सुविधा में ही लिप्त रहने से जीवन साथी का व्यक्ति के प्रति आकर्षण तो सदा रहेगा परन्तु वह उसके मूड औश्र विचारों की परवाह नहीं करेगा। इसके फल स्वरुप वैवाहिक जीवन में कटुता आती है।

5. पंचम भाव में मंगल होने पर व्यक्ति का जीवन साथी के साथ आध्यात्मिक स्तर पर अधिक सम्बन्ध होता है। उसकी यौन क्रिया में कम रुचि होगी। अतः व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक संतुष्टि में कमी रहने से वैवाहिक जीवन अतृप्त रहता है।

6. षष्ठ भाव में मंगल होने पर जीवन साथी को यौन–क्रिया में अधिक रुचि नहीं होगी। वह आस–पास के लोगों के झगड़े निपटाने में अपनी निपुणता दिखाने में अधिक व्यस्त रहेगा जिससे वैवाहिक जीवन के सुख में कमी रहेगी।

7. सप्तम भाव में मंगल हाने पर व्यक्ति के जीवन साथी की रति क्रिया में आत्याधिक रुचि होंगी। अपनी संतुष्टि के लिए वह अमानवीय व्यवहार का भी उपयोग करेगा। अतः आपस में प्रेम भाव प्रदर्शन का विशेष ध्यान रखने पर ही वैवाहिक जीवन ठीक रहेगा।

8. अष्टम भाव का मंगल व्यक्ति के जीवन साथी में यौन क्रिया की अधिक अभिलाषा पैदा करता है। ऐसी वृत्ति वैवाहिक सुख में दरार पैदा कर सकती है।

9. नवम भाव का मंगल परस्पर ग्रह के अनुसार शारीरिक सुख

शेष पेज 19 पर.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

शेष पेज 06 से आगे.....

अकर्मण्य होता है उसे लक्ष्मी की कृपा नहीं मिलती।

जिसके घर में कलह होती है, जो अपनी पत्नी का बात–बात पर अपमान करता है उसके घर में लक्ष्मी का वास नहीं होता।

जो अपने घर में शिव, विष्णु, गणपति व शालिग्राम को स्थापित नहीं करता और उनकी नित्य पूजा नहीं करता उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती है।

जो स्त्री गंदी और पाप कर्म में रत, पर–पुरुषों में मन लगाती है, जिसका स्वभाव दूषित होता है, जो बात–बात पर क्रोध करती है, जो अपने पति को दबा कर रखती है, अपमानित व मिथ्या भाषण करती है उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती है। जो स्त्री अपने घर को सजा कर नहीं रखती, जिसके विचार उत्तम नहीं होते जो अपना घर छोड़कर दूसरों के घर नित्य जाती रहती है, दयाहीन, स्वभाव से निर्दयी, चुगलखोर, जो दूसरों को लड़ा–भिड़ाकर स्वयं को चतुर समझती है, उसके घर में लक्ष्मी का वास नहीं होता है।

जो स्त्री स्वयं को सजा–संवार कर नहीं रखती, घर को अस्त–व्यस्त रखती है, जो स्त्री दिन में सोती रहती है, माता–पिता, सास, ससुर का आदर नहीं करती, बच्चों से प्रेम हीं करती, उसके घर में लक्ष्मी कभी नहीं रहती है।

जो स्त्री अपने घर में पूजा का स्थान नहीं रखती, जो देवताओं की आरती नहीं उतारती, उन्हें धूप नहीं दिखाती, जो आरती नहीं गाती, लक्ष्मी उसका साथ नहीं देती है।

सामान्यतया हम उपर्युक्त बातों का ध्यान नहीं रखते जो छोटी है मगर काम की। इस जानकारी के अभाव में उपार्जित धन भी हाथ से निकल जाता है। इसलिये पहले आचार–विचार में परिवर्तन लाऐ फिर करे दिपावली पूजन फिर क्यूँ नहीं आऐगी माता लक्ष्मी हम सब के घर–शुभ दिपावली।

शेष पेज 7 से आगे.....

तब भगवान् ने किसान को समझाया कि लक्ष्मी को मेरा श्राप था, जो बारह वर्ष से तुम्हारी सेवा कर रही थी। फिर लक्ष्मी चंचल होती है। इनको बड़े–बड़े ज्ञानी, धर्मात्मा, शूरवीर नहीं रोक सके। किसान ने पुनः हठपूर्वक कहा कि नहीं, मैं लक्ष्मी जी को अब नहीं जाने दूँगा।

इस पर लक्ष्मी जी ने मंद–मंद मुस्कुराते हुए स्वयं ही कहा कि हे किसान! यदि तुम मुझे रोकना चाहते हो, तो सुनोः– कल तेरस है। तुम अपना घर स्वच्छ रखो। रात्रि में घी का दीपक जला कर रखना तब मैं तुम्हारे घर में आऊँगी। उस समय तुम मेरी पूजा करना। किंतु मैं तुम्हें दिखायी नहीं दूँगी।

किसान ने कहाः– ठीक है, मैं ऐसा ही करुँगा इतना कह और सुन लेने के बाद लक्ष्मी जी दसों दिशाओं में फैल गयीं। भगवान् देखते ही रह गये।दूसरे दिन किसान ने लक्ष्मी जी के कथनानुसार कार्य को पूर्ण कर, रात्रि में घी का दीपक प्रज्जवलित कर, लक्ष्मी पूजन किया। उसका घर धन–धान्य से पूर्ण हो गया। इसी भाँति वह प्रतिवर्ष तेरस के दिन लक्ष्मी जी की पूजा करने लगा। उस किसान को ऐसा करते देख कर कितने ही लोगों ने लक्ष्मी जी की पूजा करनी शुरु कर दी और यह तेरस धन तेरस के नाम से विख्यात हुई। अतः इस दिन सभी को लक्ष्मी पूजन करना कल्याणकारी है। इस कथा से एक निष्कर्ष यह भी निकलता है कि कभी भी किसी की वस्तु को चोरी से अपने उपयोग में न लें, न ही पीवें, न ही खावें।

❋❋❋

शेष पेज 13 से आगे.....

क्यों कि यमराज के रुष्ट होने से प्राणी को नरक में दी जाने वाली यातनाओं का कष्ट भोगना पड़ता है। दैत्यराज बलि के वामन भगवान के मांगे वरदान के अनुसार उस दिन जो व्यक्ति यमराज को दीपदान करता हे उसको यम–यातना नहीं होती और दीपावली मनाने वाले को घर को लक्ष्मी जी कभी छोड़कर अन्यत्र नहीं जाती।

पुराणों के अनुसार इस पर्व का नरकासुर वध से भी संबंध है। शंद्र सहित देवताओं को दुःखी एवं त्रस्त करने वाले नरकासुर का भगवान कृष्ण ने इसी दिन वध करके पृथ्वी को भार मुक्त किया था। उसी के उपलक्ष्य में इसे मनाया जाता है। इस तिथि को सूर्योदय से पूर्व ही प्रातः काल में स्नान करने का बड़ा महात्मय माना गया है। श्री ब्रजपुराण के अनुसार जो मनुष्य प्रातः काल स्नान करता है वह प्रायः निरोगी रहता है और जीवन भर सुखी और सन्तुष्ट रहता है।

इस पर्व पर स्नान करने के पूर्व शरीर पर तिल के तेल की मालिश करने का अधिक महात्मय बताया गया हैं इस चतुर्दशी के दिन यदि दीपावली हो जाय तो तेल में लक्ष्मी और जल में गंगाजी निवास करती है ऐसा विश्वास किया जाता है।

चतुर्दशी को महारात्रि माना जाता है इसलिए इसमें शक्ति के उपासकों को शक्ति की पूजा करनी चाहिये। इस रात्री में मंत्र भी सिद्ध किये जा सकते है।

पूजन विधि विधानः– यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को रखा जाता है। इस दिन शरीर पर तिल के तेल की मालिश करके सूर्योदय के पूर्व स्नान करने का विधान है। स्नान के दौरान अपामार्ग को शरीर पर स्पर्श करना चाहिये। स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर तर्पण करके तीन अंजलि भर कर जल अर्पित करें। इसे तीन दिन तक करना चाहिए चूंकि यमराज देव भी हैं और पितर भी अतः जिनके माता पिता जीवित हों, उनको भी नरक चतुर्दशी के दिन जलांजलि अर्पित कर यमराज और भीष्म का तर्पण करना चाहिए। इस प्रकार तर्पण कर्म सभी पुरुषों को करना चाहिये, चाहे उनके माता–पिता गुजर चुके हो या जीवित हों। फिर देवताओं का पूजन करके सांयकाल यमराज को दीपदान करने का विधान है।

दीपक जलाने का कार्य त्रयोदशी से शुरु करके अमावस्या तक करना चाहिये। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण का पूजन करने का भी विधान बताया गया है क्यो कि इसीदिन उन्होंने नरकासुर का वध किया था। इस दिन जो भी व्यक्ति विधिपूर्वक भगवान कृष्ण का पूजन करता है उसके सारे मन के ताप दूर हो जाते है और अंत में वैकुंठ में उसे जगह मिलती है।

❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

सुहागिन, पाँच एक वर्ष से कम की कन्यायें और कम से कम एक ब्राह्मण को भोजन कराके और दक्षिणा देकर विदा करें तथा शंख को किसी लाल वस्त्र में बाँधकर अपने धन स्थान में रख दें। जिस दिन यह प्रयोग समाप्त हो उसके 40 दिन तक शंख को धूप अवश्य दिखायें, इसके बाद शंख को पूजा स्थान या धन स्थान पर रखकर भूल जायें। आपके इस प्रयोग से माँ लक्ष्मी का आपके यहाँ स्थायी वास हो जायेगा। सावधानी यह रखें कि इस प्रयोग की चर्चा किसी से ना करें और जो चांवल प्रयोग में लायें वो खण्डित ना हो। ऐसा लगातार चार दिन तक करें। आप पर माँ लक्ष्मी की अवश्य कृपा होगी।

शास्त्रानुसार प्रत्येक पूर्णिमा पर प्रातः 10 बजे पीपल वृक्ष पर माँ लक्ष्मी का फेरा लगता हैं। इसलिए जो व्यक्ति आर्थिक रूप से परेशान हो वो इस समय पीपल के वृक्ष के पास जायें, उसका पूजन करें, जल चढ़ाये और लक्ष्मी जी की उपासना करें और कम से कम कोई भी एक लक्ष्मी मंत्र की एक माला करके आयें।

❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

बन्द होता है। इसको अपने घर और व्यवसायिक स्थल के पूजास्थान में स्थापित करने से व्यक्ति पर लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है और व्यवसाय में आर्थिक सुधार होता है। दरिद्रता दूर होती है और पारिवारिक वातावरण शांत रहता है। दक्षिणावर्ती शंख को स्थापित करने की विधि हैं–शंख को गंगाजल से शुद्ध करके घर या व्यवसाय स्थल के पूजा स्थान में लाल कपड़े के ऊपर स्थापित करें याद रहे शंख का खुला हुआ भाग ऊपर आकाश की ओर तथा मुख वाला भाग अपने मुख की और रहे एंव शंख का पूँछवाला हिस्सा दीवार की ओर रहे। रोली से रंगे चावलो कां शंख के अन्दर भरकर, शंख पर स्वास्तिक का चिन्ह बनायें तथा चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप दीप से पूजन करें। नित्य शंख का पूजन–दर्शन करना चाहिए। निम्न मंत्र से दक्षिणावर्ती शंख का जप करें–

''ऊँ हीं श्रीं नमः श्रीधरकस्याय फयोनिधिजातायं लक्ष्मीसहोदराय एश्वर्य फलदायक श्री दक्षिणावर्त्त शंखाय श्रीं हीं नमः'' दक्षिणावर्ती शंख को स्थापित करने व इसके जाप के लिए स्फटिक या कमलगट्टे की माला अत्यन्त लाभकारी है।

गोमती चक्र–गोमती चक्र की स्थापना पूजा स्थल में करने से धन में वृद्धि होती है। तिजोरी में भी गोमती चक्र की स्थापना कर सकते है। दीपावली पर गोमती चक्र की स्थापना करने से चमत्कारी लाभ प्राप्त होते है। गोमती चक्र समुद्र से प्राप्त अत्यन्त शुभ वस्तु है जो व्यापार, आय, समृद्धि में वृद्धि करते है। घर की शांति, रोग आदि में भी यह लाभकारी हैं। गोमती चक्र को स्थापित करने की विधि है– दीपावली के दिन ग्यारह गोमती चक्रों को गंगाजल से शुद्ध करके उन पर सिन्दूर लगायें और लाल कपड़े में बाँधकर अपनी दुकान, शोरूम, फैक्टी, ऑफिस, व्यवसाय स्थल के मुख्य द्वार पर बांध दें ऐसा करने से व्यापार में उन्नति होती है।

यंत्रों की स्थापना–दीपावली पर अक्सर लोग दीवारों और पूजन में सिर्फ लक्ष्मी यंत्र बना लेते हैं। पर कुछ यंत्र ऐसे हैं जिनकी स्थापना करने से हमेशा ही सुख, वैभव, समृद्धि, ऐश्वर्य और शान्ति प्राप्ति होती है। दीपावली के दिन इन यंत्रों की स्थापना करें। श्री गणेश यंत्र, श्री लक्ष्मी यंत्र, श्री विष्णु यंत्र, श्री गरुण वीसा यंत्र, कनक धारा यंत्र, श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र, श्री कुबेर यंत्र, श्री यंत्र। अपने घर ओर व्यवसायिक स्थल पर इन यंत्रों को स्थापित करने से सुख–समृद्धि की वृद्धि होती है। रूके हुये धन की समस्या कम होती है। आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। रूके हुये कार्य पूर्ण होते है। इसके अच्छे फल प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन इन यंत्रो का पूजन व दर्शन करे। ❋❋❋

शेष पेज 12 से आगे.....

गाड़े कि उसका मुँह जमीन से कुछ ऊपर दिखता रहें। गोले के चारों तफर बूरा विखेर दें। यह क्रिया निष्ठा पूर्वक करें। लक्ष्मी जी का स्थायी वास होगा।

–दीपावली के दिन देवी दुर्गा के सम्मुख देवी जी के 108 नामों का स्मरण करें। और यह क्रिया प्रतिदिन करते है। वांछित धन की प्राप्ति होगी।

–दीपावली` आरम्भ कर नित्य प्रातः कुछ भी खाने से पहले तुलसी के पत्र का सेवन करे।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पा)

–दीपावली की रात चाँदी की डिबियाँ (ढक्कन, वाली) में नाग केसर व शहद भर कर तिजोरी में रख दे और अगली दीपावली तक ऐसे ही रहने दे इसके समक्ष प्रतिदिन दीपक जला कर विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ करे वर्ष भर तिजोरी भरी रहेगी।

–दीपावली के दिन चंद्र व शुक्र यंत्र बनवा कर दोनों में क्रमशः मोती व जरकन लगवा कर मंत्रों से अभिमंत्रित कर घर के पूजा स्थल पर स्थापित करे तथा प्रतिदिन पूजा व दर्शन करें।

–श्री यंत्र या महालक्ष्मी यंत्र के सम्मुख श्री सूक्त का पाठ दीपावली वाले दिन से प्रारम्भ करके नित्य करे धनागम अवश्य होगा।

–सफेद गुंजा को लक्ष्मीजी के मंत्रों से अभिमनित्रत करके शहद में डबोकर तिजोरी में रखे।

तुला- (रा, री, रे, रो, रु, ता, ती, तू, त)

–दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन में एक इत्र की शीशी रखें उसमें से थोड़ा सा इत्र लक्ष्मी जी को अर्पित करे फिर स्वंय वह इत्र लगाए और प्रतिदिन उसमें से इत्र लगा कर कार्य स्थल पर जाये।

–सूर्य व मंगल यंत्र बनवा कर दोनों पर क्रमशः माणिक्य व मूंगा लगवा कर मंत्रों से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल पर रखे व प्रतिदिन पूजन दर्शन करें।

–दीपावली के दिन से प्रारम्भ कर प्रत्येक रविवार को गायत्री व मंगलवार को मंगल मंत्र का जाप रुद्राक्ष की माला से करे धन लाभ होगा।

–दीपावली के दिन श्री महालक्ष्मी यंत्र को स्थापित कर नित्य इन्द्र कृत महालक्ष्मी अष्टक स्त्रोत का पाठ करें। धन वृद्धि होगी।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

–गणेशजी व लक्ष्मी जी का संयुक्त यंत्र का पूजा अर्चन करके तिजोरी में रखे। यह क्रिया दीपावली को करे।

–दीपावली के दिन गुरु व बुध यंत्र बनवा कर उसमें सुनहला व ओनेक्स लगवा कर ग्रहों के मंत्रो से अभिमंत्रित करके घर के पूजा स्थल पर स्थापित करे तथा नित्य पूजन व दर्शन करें।

–दीपावली के दिन श्री विष्णु की प्रतिमा के सम्मुख ऊँ नमो नारायणायः मंत्र का जाप प्रारमी करके प्रतिदिन निष्ठा पूर्वक करें।

–लक्ष्मी जी के सम्मुख महालक्ष्मी मंत्र का जाप दीपावली वाले दिन से प्रारम्भ करके प्रतिदन करे। लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहेगी।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा भे)

–दीपावली के दिन शनि व शुक्र यंत्र बनवा कर उसमें नीली व जरकन लगवा कर ग्रहों के मंत्रों से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल प लगे व प्रतिदन दर्शन व पूजा करें।

–दीपावली के दिन 11 हल्दी की गांठ पीले कपड़े में बाँध कर लक्ष्मी मंत्र से अभिमंत्रित करके तिजोरी में रखे और नित्य दीपक जला कर पूजा करें।

–दीपावली वाले दिन लक्ष्मी जी के सममुख महालक्ष्मी मंत्र का जाप आरम्भ करके प्रतिदिन करे धन आगमन होगा।

मकर- (भे, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

–दीपावली के दिन शनि व मंगल यंत्र बनवा कर उसमें नीली व मूंगा लगवा कर ग्रहो के मेंत्रो से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल पर रखे तथा नित्य पूजा व दर्शन करें।

–दीपावली के दिन एक सुपाड़ी व एक तांबे का सिक्का किसी पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। रविवार को उसी पीपल के पेड़ का पत्ता लेकर कार्य स्थल की गद्दी के नीचे रख दें। धन आता रहेगा।

–दीपावली के दिन शनि यंत्र को घर के पश्चिम दिशायें नीले कपड़े में बाँध कर रखे नित्य शनि मंत्रों से जप करे। और तेल का दीपक जलाए।

–दीपावली से शुरु करके प्रति मंगलवार को ऋण हर्ता मंगल स्त्रोत का पाठ करे। धन वृद्धि होगी।

कुंभ- (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

–दीपावली के दिन गुरु यंत्र बनवा कर उसमें सुनहला लगवा कर ग्रहों के मंत्रों से अभिमंत्रित करे पूजा स्थल पर रखे तथा नित्य व दर्शन करें।

–दीपावली की रात से पहले आने वाले शनिवार को घर की साफ सफाई शुरु कर दें, तथा शाम के समय घर के सभी वल्व व लाइट 20 मिनट के लिए प्रति दिन जलाए।

–महाधनदाता यंत्र को मंत्रों से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल पर रखे तथा नित्य लक्ष्मी मंत्र का जाप करें।

–श्री लक्ष्मी नारायण यंत्र को दीपावली के दिन पूजा स्थल पर रखे तथा प्रतिदिन जाप करें।

मीन- (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची, ज)

–दीपावली के दिन शनि व मंगल यंत्र बनवा कर उसमें नीली व मूंगा लगवा कर ग्रहों के मंत्रों से अभिमंत्रित करके पूजा स्थल पर रखे तथा नित्य पूजा व दर्शन करे।

–घर के पूजा स्थल पर श्री यंत्र, कुबेर यंत्र व दक्षिणावर्ती शंख स्थापित कर प्रतिदिन निष्ठा पूर्वक पूजा अर्चना रके यह क्रिया दीपावली वाले दिन से प्रारम्भ करें चमत्कारी परिणाम प्राप्त होंगे।

–दीपावली के दिन लक्ष्मी जी गणेश जी की प्रतिमा पर मूंगा लगवा कर पूजा स्थल पर स्थापित करे तथा नित्य महालक्ष्मी मंत्र से जाप करें।

–दीपावली वाले दिन में 'श्री वशिष्ठ मुतिकृत दारिद्रय दहन शिव' स्त्रोत का पाठ प्रारम्भ करके प्रतिदिन करें।

उपरोक्त उपायों के अतिरिक्त कुछ यंत्र के लॉकेट राशि अनुरुप यदि गले में दीपावली वाले दिन पूरी निष्ठा व श्रद्धा से धारण करेगा तो अवश्य लाभ होगा।

मेष–शनि यंत्र, **वृष**–गुरु यंत्र, **मिथुन**–मंगल यंत्र
कर्क–शुक्र यंत्र, **सिंह**– बुध यंत्र, **कन्या**–चंद्र यंत्र
तुला–सूर्य यंत्र, **वृश्चिक**–बुध यंत्र, **धनु**–शुक्र यंत्र
मकर–मंगल यंत्र, **कुम्भ**–गुरु यंत्र, **मीन**–शनि यंत्र

मेरी ओर से सभी पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभ कामनाए। ❋❋❋

शेष पेज 16 से आगे.....

प्रदान करने वाला जीवन साथी देता है। वह जीवन में शारीरिक सुख को प्राथमिकता नहीं देता। दम्पत्ति का जीवन सुखी रहता है।

10. दशम भाव का मंगल व्यक्ति के रति–क्रिया में प्रवीण बनाता है। वह अपने जीवन साथी की भावनाओं की कटु करता है और इसकी इच्छाओं की पूर्ति करने वाला होता है। जीवन साथी का सहयोग मिलने पर वैवाहिक जीवन सुखी रहता है।

11. एकादश भाव में मंगल होने पर व्यक्ति शारीरिक सुख पाने की अपनी इच्छा का प्रदर्शन नहीं करता। वह रति क्रिया में भाग लेने की बजाय मानसिक कल्पना में खोया रहता है। इस कारण जीवन साथी की यदा–कदा ही पूर्ण संतुष्टि हो पाती है और वैवाहिक सुख में कमी आती है।

12. बारहवें भाव का मंगल होने पर व्यक्ति का जीवन साथी अपनी वासना को शांत करने को प्राथमिकता देगा वह अप्राकृतिक यौनाचार भी कर सकता है जिससे पति–पत्नी के मध्य तनाव रहेगा। अतः परस्पर विचार विमर्श और सहयोग करने पर ही वैवाहिक जीवन ठीक रह पायेगा।

सुखी वैवाहिक जीवन बिताने के लिये युवक–युवती को अपनी कुण्डली का विधिवत मिलान करवा लेना चाहिए जिससे उनकी शारीरिक व मानसिक सहिष्णुता का सटीक पूर्वानुमान हो जाए। यदि मंगल थोड़ा कुप्रभावी हो तो पति–पत्नी दोनों हनुमान चालीसा पाठ, पूजन, मंगल मन्त्र जप, और मंगलवार का व्रत रख कर शारीरिक और मानसिक विषमताओं को संतुलित कर अपने वैवाहिक जीवन को सुखी बना सकते है। उज्जैन स्थिति एक मात्र मंगल–नाथ के मन्दिर में विधिवत् पूजा भी शुभ फलदाई होती है। ❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262